ISSN: 2582-7219

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

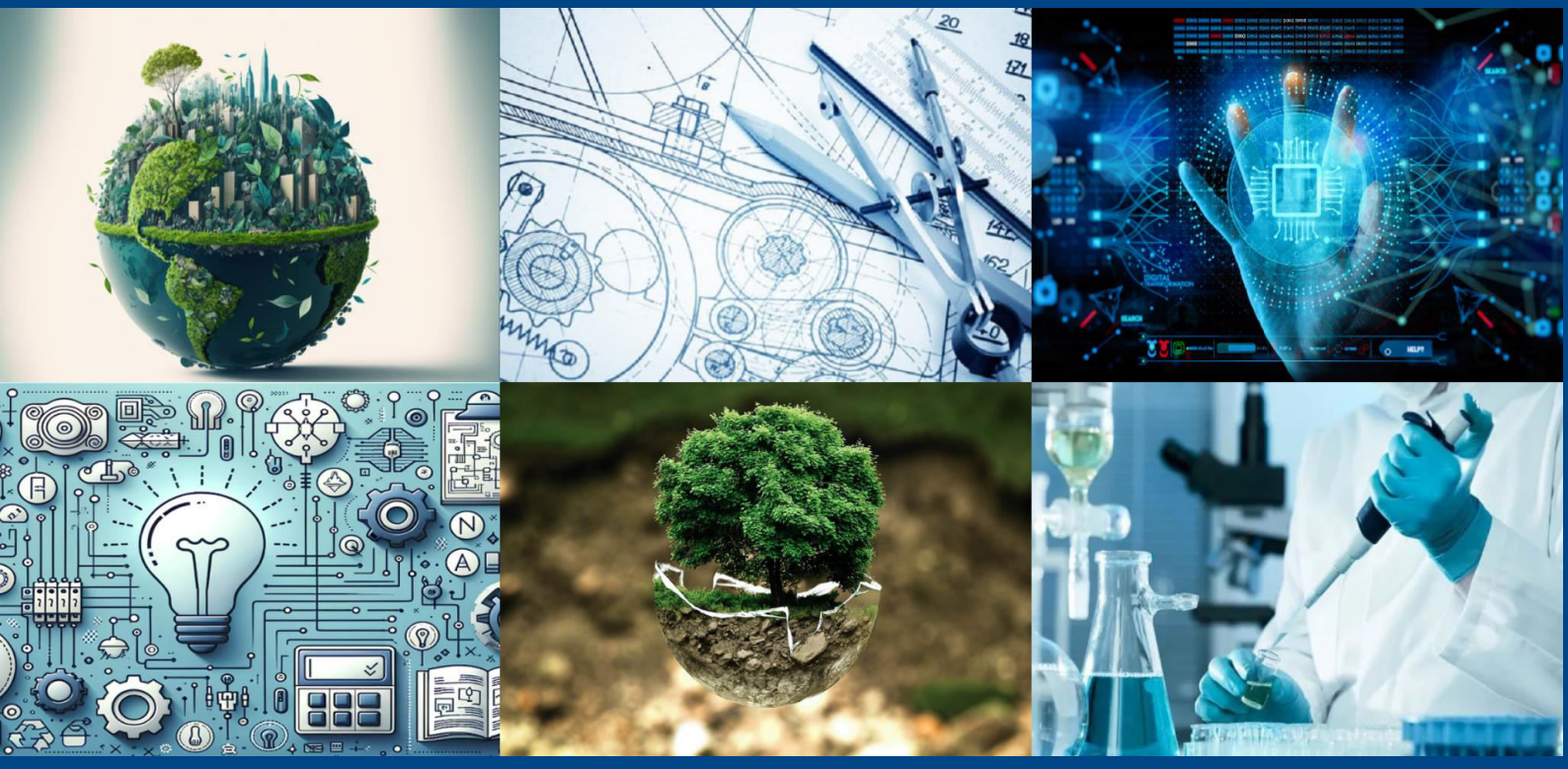

Impact Factor: 7.521

Volume 8, Issue 1, January 2025

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI: 10.15680/IJMRSET.2025.0801050

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श – एक आलोचनात्मक विश्लेषण

राजेश कुमार मीना

सहायक आचार्य, (हिन्दी)

श्री डूंगरगढ़ महाविद्यालय, श्री डूंगरगढ़

सारांश

हिन्दी साहित्य समाज के विभिन्न वर्गों, विचारधाराओं और जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम रहा है। इसमें जीवन के प्रत्येक पहलू को स्थान दिया गया है, जिसमें युवा, महिलाएँ, श्रमिक, वंचित वर्ग आदि प्रमुख रहे हैं। परंतु वृद्धों का विमर्श अपेक्षाकृत कम देखा गया है। वृद्धावस्था केवल जैविक अवस्था नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से भी गहराई से जुड़ी होती है। भारतीय समाज में पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन, नगरीकरण, आर्थिक उदारीकरण और भौतिकतावादी दृष्टिकोण के बढ़ते प्रभाव ने वृद्ध जनसंख्या की स्थिति को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है। इस संदर्भ में हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श न केवल सामाजिक संवेदना को उजागर करता है, बल्कि वृद्धों के मानसिक, शारीरिक एवं सामाजिक संघर्षों को भी चित्रित करता है। हिन्दी साहित्य में वृद्धावस्था के विभिन्न पहलुओं को कथा, उपन्यास, नाटक और कविता के माध्यम से व्यक्त किया गया है। प्रेमचंद, हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, राजेंद्र यादव, अमृतलाल नागर, भारतेन्दु हरिश्चंद्र जैसे लेखकों ने वृद्धों की समस्याओं को अपने साहित्य में प्रमुखता से स्थान दिया है। प्रेमचंद की कहानियों में वृद्ध पात्रों की सामाजिक स्थिति को मार्मिक ढंग से उकेरा गया है, वहीं हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाओं में वृद्धावस्था की विडंबनाओं को हास्य और व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। वृद्ध विमर्श केवल समस्याओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें वृद्धों की भूमिका, उनके अनुभवों का समाज में योगदान और उनकी आत्मनिर्भरता के पहलुओं को भी रेखांकित किया गया है। वर्तमान समय में वृद्ध विमर्श का क्षेत्र व्यापक हुआ है, जहाँ वृद्धाश्रम, स्वास्थ्य सेवाएँ, तकनीकी साक्षरता, पारिवारिक असमंजस और अकेलेपन जैसे विषयों पर गहन चर्चा की जा रही है। समकालीन साहित्य में वृद्ध पात्रों को केवल बोझ या सहानुभूति का पात्र न बनाकर उन्हें जीवन के सक्रिय सहभागी के रूप में भी प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध–पत्र में हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श के स्तर एवं स्वरूप का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द : हिन्दी साहित्य, वृद्ध विमर्श, भौतिकतावादी दृष्टिकोण, समकालीन साहित्य

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श केवल वृद्धावस्था के संकटों तक सीमित नहीं, बल्कि समाज में वृद्धों की भूमिका, उनकी अनुभूति और जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण को भी प्रतिबिंबित करता है। यह विमर्श न केवल साहित्यिक, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक ऐसे वर्ग की आवाज को सामने लाता है, जो प्रायः उपेक्षित रह जाता है। हिंदी कहानियों में प्रेमचंद की 'बूढी काकी', ऊषा प्रियंवदा की 'वापसी', सुषम बेदी की 'झाड़', भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत', 'याद', कृष्णा अग्निहोत्री की 'यह क्या जगह है दोस्तो', निर्मल वर्मा की 'जाल', मोहन राकेश का 'मलबे का मालिक' तरुण भटनागर का 'फोटो का सच', निर्मल वर्मा की 'बीच बहस', राधेश्याम की 'पेंशन' आदि कहानियों में वृद्धों की अवमूल्यित स्थिति का चित्रण अनेक संदर्भों में मिलता है। इनके अलावा सुषम बेदी की 'सड़क की लय', मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'प्रेत कामना', शर्मिला बोहरा जालन की 'ईमेल', गिरीश पंकज की 'वही. आर. एस.', मृणाल पांडे की 'धूप छांह', 'कैंसर', उदय प्रकाश की 'छप्पन तोले करधन', गीतांजलि श्री की 'इति', डॉ. नीरज माधव की 'बिजूकाश आदि कहानियों में वृद्ध जीवन की दशाओं का सांगोपांग चित्रण मिलता है। सही है कि विमर्शों की कोख से उपजा 'वृद्ध विमर्श' समकालीन हिंदी कथाकार अपनी कहानियों द्वारा वृद्धों की स्थिति का बेबाकी से चित्रण कर रहा है तथा उनके पक्ष में वातावरण बनाने में सफल हो रहा है।

मनुष्य का जीवन शैशव, यौवन और वृद्धावस्था के विभिन्न चरणों से गुजरता है। प्रत्येक अवस्था के अपने विशिष्ट अनुभव और चुनौतियाँ होती हैं, लेकिन वृद्धावस्था एक ऐसा पड़ाव है जो व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से अनेक परिवर्तनों के दौर से गुजारता है। भारतीय संस्कृति में वृद्धों को सम्मान और अनुभव का प्रतीक माना जाता रहा है, परंतु आधुनिकता, औद्योगीकरण, नगरीकरण और बदलते सामाजिक मूल्यों के कारण वृद्धों की स्थिति में अनेक परिवर्तन आए हैं। परिवारिक संरचनाओं में आए बदलावों, विशेष रूप से संयुक्त परिवारों के विघटन और एकल परिवारों के बढ़ते चलन ने वृद्धों की सामाजिक स्थिति को प्रभावित किया है।

हिन्दी साहित्य, जो समाज का दर्पण माना जाता है, ने अपने विभिन्न रूपों, कथा, उपन्यास, नाटक, कविता और संस्मरणों के माध्यम से वृद्ध विमर्श को प्रस्तुत किया है। यह विमर्श केवल वृद्धावस्था की शारीरिक दुर्बलताओं तक सीमित नहीं, बल्कि इसके सामाजिक, मानसिक और आर्थिक पहलुओं को भी उजागर करता है। वृद्धों की अस्मिता, पारिवारिक उपेक्षा, अकेलापन, आर्थिक निर्भरता, स्वास्थ्य समस्याएँ, वृद्धाश्रमों की स्थिति और समाज में उनकी भूमिका जैसे विषय हिन्दी साहित्य में प्रमुखता से उभर कर आए हैं।

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI: 10.15680/IJMRSET.2025.0801050

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

'विमर्श' शब्द पिछले कुछ वर्षों में बहुत महत्त्वपूर्ण हुआ है। विमर्श शब्द के लिए अंग्रेजी में Consultation या Discourse शब्द का प्रयोग किया जाता है। विमर्श के अर्थ बहस, सलाह, परामर्श, संवाद एवं सोच विचार कर वास्तविकता का पता लगाना आदि होते हैं। साहित्य में भी 'विमर्श' महत्त्वपूर्ण होने लगा है। हिन्दी साहित्य का यह समय उत्तर–आधुनिकता का है। इसने विमर्श को प्रश्रय दिया है। वर्तमान में साहित्य में विमर्श उत्पन्न कर चेतना जाग्रत की जाती है।

भारतीय संस्कृति में परिवार संकल्पना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता रहा है। हमारे यहां वरिष्ठजन ही संस्कृति और संस्कारों का समाज में प्रचार–प्रसार करते रहे हैं। लेकिन जिस प्रकार चंद्रमा और सूर्य को भी ग्रहण लग जाता है, उसी प्रकार देश के संस्कारों को भी ग्रहण लग गया। इसी भारत भूमि में माता–पिता संतान प्राप्ति हेतु साधु, ऋषियों, मुनियों का आशीर्वाद लेने के लिए यज्ञादि करते थे, आशीर्वाद प्राप्ति के लिए सन्नद्ध रहते थे और जहां पुत्र भी उनकी आज्ञा मानकर राजगद्दी छोड़ दिया करते थे, अपने कंधों पर तीर्थ यात्रा के लिए निकल पड़ते थे। हमारे शास्त्र भी बुजुर्गों के आदर और सम्मान की गाथाएं कहते हैं। वृद्धजन सम्मान में संत–ऋषि अपनी वाणी मुखरित करते रहे हैं। यजुर्वेद कहता है–

यदापि पोश मातरं पुत्रः प्रभुदितो धयान्।

इतदगे अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ ममां।।

भारतीय समाज में वृद्धावस्था की स्थिति और परिवर्तन :

परंपरागत भारतीय समाज में वृद्धों को परिवार और समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वे घर–परिवार के मार्गदर्शक और निर्णयकर्ताओं की भूमिका निभाते थे। किंतु आधुनिक समय में जीवनशैली में हुए बदलावों ने वृद्धों को एक अलग स्थिति में ला खड़ा किया है। युवा पीढ़ी की व्यस्तता, पश्चिमीकरण, आधुनिक जीवनशैली और पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन के कारण वृद्धों को हाशिए पर धकेला जाने लगा है। कई बार वृद्ध माता–पिता अपने ही परिवार में उपेक्षित महसूस करते हैं, जिसके कारण वे मानसिक अवसाद और अकेलेपन के शिकार हो जाते हैं।

समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने वृद्धावस्था को केवल जैविक प्रक्रिया न मानकर इसे सामाजिक और मानसिक स्थिति से भी जोड़ा है। वृद्धावस्था में व्यक्ति अपने अतीत की स्मृतियों और वर्तमान की वास्तविकता के बीच झूलता रहता है। कभी वह अनुभवों के आधार पर अपने परिवार और समाज के लिए उपयोगी बनने की कोशिश करता है, तो कभी उपेक्षित महसूस कर सामाजिक संबंधों से कट जाता है। हिन्दी साहित्य में यह द्वंद्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 1, January 2025| DOI: 10.15680/IJMRSET.2025.0801050

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श – प्रमुख लेखकों की दृष्टि :

हिन्दी साहित्य में कई लेखकों ने वृद्धावस्था के विविध पहलुओं को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है।

प्रेमचंद – प्रेमचंद की कहानियों में वृद्ध पात्रों की स्थिति को बड़ी संवेदनशीलता के साथ उकेरा गया है। उनकी कहानी 'बूढ़ी काकी' वृद्ध विमर्श का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें वृद्धावस्था की उपेक्षा, असहायता और भूख की पीड़ा को मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'पंच परमेश्वर' और 'निर्मला' जैसी रचनाओं में भी वृद्ध पात्रों की मनोदशा और सामाजिक स्थिति को दिखाया गया है।

हरिशंकर परसाई – परसाई जी ने वृद्धावस्था से जुड़ी विडंबनाओं को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में यह देखा जा सकता है कि किस प्रकार समाज वृद्धों को अनावश्यक समझने लगता है, लेकिन उनके अनुभवों और जीवन की सच्चाइयों को नकार नहीं सकता।

राजेंद्र यादव – उन्होंने अपने साहित्य में वृद्धों की मानसिक स्थिति, अकेलेपन और आत्मनिर्भरता को बखूबी चित्रित किया है। उनकी कहानियों में वृद्धों की सामाजिक पहचान और आत्मसम्मान की रक्षा के प्रयास स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

श्रीलाल शुक्ल – 'राग दरबारी' में वृद्ध पात्रों की स्थिति को व्यंग्य और कटाक्ष के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उनकी रचनाओं में वृद्ध समाज की समस्याओं के साथ–साथ उनकी सामाजिक उपयोगिता को भी दिखाया गया है।

अमृतलाल नागर – नागर जी की रचनाओं में वृद्धावस्था के मानसिक और सामाजिक पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। उनकी कहानियों में वृद्धों का अकेलापन और समाज में उनकी भूमिका का यथार्थ चित्रण मिलता है।

समकालीन साहित्य और वृद्ध विमर्श :

समकालीन हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श और अधिक व्यापक हुआ है। अब वृद्धावस्था केवल समस्याओं तक सीमित नहीं रह गई, बल्कि इसमें वृद्धों के आत्मनिर्भर बनने, तकनीकी ज्ञान अर्जित करने, अपने शौक पूरे करने और समाज में अपनी भूमिका बनाए रखने की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है।

आजकल के उपन्यासों और कहानियों में वृद्धों को सक्रिय भूमिका में दिखाया जाने लगा है, जो यह प्रमाणित करता है कि वृद्धावस्था का अर्थ केवल संन्यास नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों का सदुपयोग भी हो

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

सकता है। वृद्धाश्रमों, पेंशन योजनाओं, डिजिटल जागरूकता और स्वास्थ्य सुविधाओं पर केंद्रित साहित्य इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

वृद्ध विमर्श का सामाजिक और साहित्यिक महत्व :

हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श न केवल वृद्धों की समस्याओं को सामने लाने का कार्य करता है, बल्कि समाज को एक नई दृष्टि भी प्रदान करता है। यह विमर्श केवल वृद्धों की पीड़ा का चित्रण नहीं, बल्कि उनके जीवन के सकारात्मक पक्ष, अनुभवों के महत्व और समाज में उनकी भूमिका को भी रेखांकित करता है। वर्तमान समय में, जब परिवारिक संरचनाओं में बदलाव हो रहा है और वृद्धों को सामाजिक समर्थन की आवश्यकता पहले से अधिक हो गई है, तब साहित्य के माध्यम से वृद्ध विमर्श को अधिक विस्तार देना आवश्यक हो जाता है। इससे समाज में वृद्धों के प्रति संवेदनशीलता विकसित होगी और उनकी सामाजिक स्थिति को सुदृढ किया जा सकेगा।

निष्कर्ष :

हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श केवल एक साहित्यिक विषय नहीं, बल्कि सामाजिक संवेदना और यथार्थ का दर्पण भी है। यह विमर्श हमें वृद्धावस्था की चुनौतियों को समझने, समाज में वृद्धों की भूमिका को पुनः परिभाषित करने और उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देता है। हिन्दी साहित्य के विविध रचनाकारों ने वृद्ध पात्रों के माध्यम से न केवल उनकी पीड़ा और संघर्ष को दिखाया, बल्कि उनके अनुभव, ज्ञान और समाज में उनकी उपयोगिता को भी स्थापित किया है। इस विमर्श की निरंतरता समाज में वृद्धजनों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

संदर्भ :

पुस्तकें

1. त्रिपाठी, विजयनाथ. हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध जीवन का यथार्थ. राजकमल प्रकाशन, 2012.
2. शर्मा, रामबाबू. वृद्धावस्था और हिन्दी साहित्य. वाणी प्रकाशन, 2018.
3. सिंह, नरेश. हिन्दी साहित्य में वृद्ध जीवन की समस्याएँ. साहित्य अकादमी, 2015.
4. वर्मा, मीरा. आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में वृद्ध जीवन की त्रासदी. लोकभारती प्रकाशन, 2020.
5. जोशी, विमल. भारतीय समाज और वृद्ध विमर्श. प्रभात प्रकाशन, 2016.

शोध पत्र एवं लेख

6. पाठक, अरुण, 'हिन्दी उपन्यासों में वृद्धावस्था का चित्रण', आलोचना, vol. 45, no. 2, 2017, pp. 67–82.
7. तिवारी, सुरेश, 'समकालीन हिन्दी कहानियों में वृद्धों की सामाजिक स्थिति,' तद्भव, no. 32, 2019, pp. 120–135.
8. सिंह, मनोज, 'हिन्दी नाटक और वृद्ध विमर्श – एक अध्ययन', साहित्य समीक्षा जर्नल, vol. 12, no. 3, 2021, pp. 90–105.

पत्रिकाएँ एवं जर्नल्स

9. तद्भव. षहिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श पर विशेषांक एवं लेख', संपादक अखिलेश, 2015–2024.
10. आलोचना, 'वृद्धावस्था और साहित्य–एक सांस्कृतिक विमर्श', संपादक नामवर सिंह एवं अन्य, 2010–2024.

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com